IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

विद्यार्थी जीवन में संस्कार निर्माण का महत्त्व

निर्देशक
डॉ. विकास सैनी
(असिस्टेंट प्रॉफेसर)
आई.ए.एस.ई. मानित विश्वविद्यालय, सरदारशहर, चुरू
सरदारशहर, चुरू

प्रस्तुतकर्ता
देवेन्द्र सिंह शेखावत
पी.एच–डी. शोधार्थी (शिक्षा)
आई.ए.एस.ई. मानित विश्वविद्यालय,

सारांश (Abstract): *संस्कार निर्माण भारतीय शिक्षा की आत्मा रहा है। विद्यार्थी जीवन मानव के व्यक्तित्व निर्माण का सर्वाधिक संवेदनशील काल होता है, जिसमें मूल्य, नैतिकता, अनुशासन एवं सामाजिक व्यवहार की नींव रखी जाती है। यह शोध पत्र विद्यार्थी जीवन में संसकार निर्माण की भूमिका, उसके शैक्षिक, सामाजिक और नैतिक प्रभावों का विष्लेषण करता है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि यदि शिक्षा प्रणाली में नैतिकता, सेवा, सह–अस्तित्व और आत्मसंयम के संस्कारों को व्यवहारिक रूप से जोड़ा जाए, तो विद्यार्थियों में चरित्रवान् नागरिकता एवं नेतृत्व का विकास संभव है।*

1. प्रस्तावना

शिक्षा अगर स्तम्भ है तो नींव है संस्कार।
सद्गुण सुख की खान है जिस पर टिका संसार।।

शिक्षा और संस्कार एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। शिक्षा मनुष्य के जीवन का अनमोल उपहार है जो व्यक्ति के जीवन की दिशा और दशा दोनों बदल देती है और संस्कार जीवन का सार है जिसके माध्यम से मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण और विकास होता है। जब मनुष्य में शिक्षा और संस्कार दोनों का विकास होगा तभी वह परिवार, समाज और देश के विकास की ओर अग्रसर होगा। शिक्षा का तात्पर्य सिर्फ किताबी ज्ञान ही नहीं बल्कि चारीत्रिक ज्ञान भी होता है जो आज की इस भागदौड़ वाली जिन्दगी में हम भूल चुके हैं। हम अपने बच्चों को अच्छे विद्यालयों में प्रवेश दिलाकर संतुष्ट हो जाते हैं परन्तु ये हमारी लापरवाही है जो हमारे बच्चों को गुमराह कर रही है। आज के अधिकांश बच्चे संभ्रान्त तो हैं पर विवेकशील नहीं।

संस्कार, व्यक्तित्व एवं चरित्र निर्माण ही विद्यार्थी के भावी जीवन की आधारशिला है। बालक ही देश का असली धन है। बच्चे देश के भावी नागरिक हैं और आगे चलकर उन्हीं के कंधों पर देश की स्वतंत्रता, संस्कृति की रक्षा तथा उसकी परिपुष्टि का भार पड़ने वाला है। आज प्रत्येक माता–पिता यह चाहते हैं कि उनके बच्चे न केवल विद्यालयी विद्या में ही सफल हों, अपितु अन्य कलाओं जैसे – खेलकूद, वक्तत्व आदि तथा विभिन्न सामाजिक प्रवृत्तियों में भी आगे आयें और सफल बनें। विद्यालय में शिक्षक एवं प्रधानाचार्य भी अपने विद्यार्थियों से अपेक्षा रखते हैं कि उनकी बुद्धि कुशाग्र बने एवं वे परीक्षा में अच्छे परिणाम लायें ताकि समाज में उनकी संस्था का गौरव बढ़े। किन्तु दुर्भाग्य की बात है कि आज पाश्चात्य संस्कृति के अन्धानुकरण के दौर में विदेशी टी.वी. चैनलों, चलचित्रों, व्यसनों, अशुद्ध खान–पान आदि ने वातावरण इतना दूषित बना दिया है कि हमारे बच्चे अगर जीवन में अच्छे संस्कार पाना भी चाहें तो उन्हें ऐसी कोई राह ही नहीं दिखती, जिस पर चलकर वे सुसंस्कारी बालक बन सकें।

2. तकनीकी शब्द

- विद्यार्थी जीवन
- संस्कार निर्माण

3. उद्देश्य

- विद्यार्थियों जीवन में संस्कार निर्माण की आवश्यकता को स्पष्ट करना।
- शिक्षा प्रणाली में संस्कार निर्माण के घटकों का विश्लेषण करना।
- विद्यालय एवं शिक्षक की भूमिका का मूल्यांकन करना।
- संस्कारित शिक्षा के सामाजिक एवं व्यक्तिगत प्रभावों का अध्ययन करना।
- आदर्शात्मक उद्धरणों के माध्यम से विद्यार्थीयों को संस्कारों के महत्त्व से अवगत कराना।

व्यक्ति के जीवन में बाल्यकाल से ही संस्कारों का विकास जरूरी है। संस्कार कभी भी मानव को दिग्भ्रमित नहीं होने देते। संस्कार व्यक्ति को आंतरिक रूप से मजबूत बनाते हैं। अच्छे संस्कार ही अच्छे व्यक्तित्व की पहचान होते हैं। शिक्षा के साथ अच्छे संस्कारों को अपनाने से ही हमारे व्यक्तित्व की पहचान होती है। जो अच्छाई के गुण होते हैं। इंसान के लिए संस्कारों की बुनियाद उसी तरह जरूरी है जैसे एक पक्के मकान के लिए मजबूत बुनियाद की। बुनियाद कमजोर होगी तो मकान ज्यादा टिक नहीं पाएगा। इसी तरह संस्कारहीन व्यक्ति भी समाज में ज्यादा नहीं टिक सकता है। संस्कार की बुनियाद परिवार से ही आती है। अभिभावकों की जिम्मेदारी है कि वे बच्चों को पढ़ाने के साथ ही उनमें अच्छे संस्कारों की नींव डालें। ऐसा करने से आत्मविश्वास जागृत होता है और सफलता कदम चूमती है। संसार का कोई भी कार्य कितना ही बड़ा क्यों न हो अंततः मनुष्य के हाथों से ही हुआ है।

समाज के बदलाव के लिए व्यक्ति में अच्छे गुणों की आवश्यकता होती है और उसकी नींव हमें हमारे बच्चों के बाल्यावस्था में ही रखनी पड़ती है। बच्चों को तीन गुण आत्मसात करवाने की आवश्यकता है। ज्ञान, कर्म और श्रद्धा। इन्हीं तीन गुणों से उनके जीवन में बदलाव आएगा और वे परिवार, समाज, और देश सेवा में आगे बढ़ेगा। आज जो राष्ट्रव्यापी अनैतिकवाद प्रदूषण हमारे समाज और देश को दूषित कर रहा है उसका कारण सिर्फ बच्चों में संस्कार और शिक्षा का अभाव है जिसके दोषी हम हैं। हम अपने झूठे दिखावे के लिए अपने भारतीय अमूल्य संस्कारों के प्रति उदासीन होते जा रहे हैं। पाश्चात्य सभ्यता का आँख मूंद कर अनुसरण करना ही हमें और हमारे बच्चों को पथभ्रष्ट कर रहा है।

शिक्षा का अन्तिम लक्ष्य सुंदर चरित्र है। शिक्षा मनुष्य के व्यक्तित्व के सभी पहलुओं का पूर्ण और संतुलित विकास करती है। बच्चों में सांसारिक और आध्यात्मिक शिक्षा दोनों की नितांत आवश्यकता है क्योंकि शिक्षा हमें जिविका देती है और संस्कार जीवन को मूल्यवान् बनाते है। शिक्षा में ही संस्कार का समावेश है। अगर हम अपने बच्चों में भारतीय संस्कृति, भारतीय परम्पराएँ, भाईचारा, एकता आदि का बीजारोपण करते हैं तो उसमें खुद–ब–खुद संस्कार आ जाते हैं जिसकी जिम्मेदारी माता–पिता, परिवार और शिक्षक की होती है।

बचपन में परिवार के बाद विशेष रूप से बच्चों को संस्कार विद्यालय में सिखाए जाते हैं। अतः शिक्षक का कर्तव्य बनता है कि वे कक्षा तथा खेल के मैदान में ऐसा वातावरण उपस्थित करें जिससे बच्चों में शिक्षा और संस्कार दोनों का विकास हो। विद्यालय स्तर पर ऐसी गतिविधि का आयोजन होना चाहिए जिससे बच्चों में अनुशासन, आत्मसंयम, उत्तरदायित्व, आज्ञाकारिता, विनयशीलता, सहानुभूति, सहयोग, प्रतिस्पर्धा आदि गुणों का विकास हो सके। अधिकांशतः सरकारी विद्यालयों में ग्रामीण परिवेश के बच्चे पढ़ने आते हैं जो मजदूर वर्ग के होते हैं। उनके माता–पिता उतने संभ्रान्त नहीं होते जिसके कारण वे अपने बच्चों का सही मार्गदर्शन कर सके। इसलिए सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। बच्चे देश के भविष्य हैं इन्हें कुशल नागरिक बनाना हमारा परम कर्तव्य है।

कोठारी आयोग ने कहा है कि ''भारत देश का भविष्य विद्यालयों में तैयार हो रहा है'' इस विचार को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षाविदों व शोधज्ञों द्वारा मंथन किया जाना चाहिए, कि विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों का संर्वांगीण विकास किस प्रकार हो? विद्यार्थी किस प्रकार अपने जीवन को उत्कृष्ट बना सकते हैं? एसे कौनसे गुण, व्यवहार, विचार एवं कर्म हैं? जिनसे उनका व्यक्तित्व विकसित हो सके। फलस्वरूप वे अपने परिवार, समाज एवं राष्ट्र को उन्नति के पथ पर ले जा सकें।

मानव जीवन में शिक्षा, व्यक्तित्व एवं संस्कारों का बड़ा महत्व माना गया है। मानव तथा पशु जीवन में यही मूलभूत अंतर है क्योंकि मनुष्य संस्कारों की परम्परा के मध्य अपना जीवन व्यतीत करता है। वह सामाजिक बन्धनों को स्वीकार कर उनकी परिधि में कार्य करता है। जबकि पशुओं के मामले में ऐसा कुछ नहीं हैं।

हमारे देश की महान संस्कृति की एक देन संस्कार है। जिनका प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में बड़ा महत्व है। एक तरह से संस्कार जीवन के आभूषण समझे गये हैं। व्यक्ति का समाज में मूल्य तथा सम्मान बहुत बढ़ जाता है। साधारण शब्दों में संस्कार का हिन्दी में अर्थ होता है संवारना। जिस तरह हीरे एवं सोने के खनन के समय कई अवशिष्टों के साथ धूल, मिट्टी से सना होता है। जब उसे अच्छी तरह साफ किया जाता है। फिर

उसे तरासने के बाद ही चमक मिलती है। हीरे को तरासने के बाद उसकी महीन घिसाई की जाती है। उसके बाद ह ीवह पत्थर हीरा बनता है, और हमारे लिए बहुमूल्य आभूषण तैयार किये जाते हैं। हीरे की कीमत संस्कारों के बाद ही बढ़ती है। संस्कारों के बिना उसकी कोई कीमत नहीं रह जाती है। प्रकृति की छोटी से छोटी वस्तु से लेकर बड़ी से बड़ी चीज़ को उपयोग में लाने के लिए संस्कारों की आवश्यकता पड़ती हैं। जिस अन्न से हमारी काया बनती है। उसे खेत में बोने के बाद दाने निकालकर उसका प्रसंस्करण कर चक्की से आटा पीसने के बाद ही यह हमारे लिए रोटी बनाने योग्य बनता है, ये समस्त संस्कार के उदाहरण हैं।

एक बालक के मन पर बड़ों द्वारा किये प्रत्येक कर्म एवं बात का गहरा असर होता है। बालक जो कुछ देखता, सुनता है, उसे शिक्षा मिलती है। वे ही उसके संस्कार बन जाते हैं। जीवन के आरम्भिक दिनों में जिन संस्कारों की नीव डाली जाती है उसका जीवन उसी अनुरूप बन जाता है।

हमने इतिहास में ऐसे कई विलक्षण उदाहरणों को देखा है, जिन्होंने जीवन की शुरुआत में ही माँ–बाप अथवा अपने गुरुजनों के व्यवहार, आचरण से प्रभावित होकर संस्कारवान बनकर अपना नाम बनाया हैं। वीर भरत शकुन्तला के कारण ही महान वीन बन सका जो आगे जाकर महान सम्राट बने और हमारे देश का नाम भी उन्हीं के नाम पर पड़ा था। जीजाबाई के कारण ही शिवाजी जैसे देशभक्त हुए। ध्रुव अपनी माता के संस्कारों की प्रेरणा के चलते अमर हुए। महाभारत के महान यौद्धा अभिमन्यु के जीवन पर उनके माता–पिता के आदर्श संस्कारों का बड़ा असर रहा जिसके चलते उन्हें महान यौद्धाओं में गिना जाता है। संस्कार परम्परा के कारण मानव में दैवीय गुण उत्पन्न हो जाते हैं, अब तक जितने भी संत, महात्मा बने हैं उनके जीवन निर्माण संस्कार के ही परिणाम हैं।

आदरणीय स्वामी विवेकानंद का जीवन संस्कार से चरित्र निर्माण का बेहतरीन अनुभव हैं। व्यक्ति में जितने अधिक अच्छे संस्कार हो उनका चरित्र उतना ही अच्छा बन जाता है। जिस व्यक्ति में बुरे संस्कारों की प्रबलता अधिक होती है, वह चरित्रहीन बन जाता है। कोई इन्सान अच्छे विचार रखे, सत्कर्म करे तो उसके विचारों एवं सत्कार्यों से आने वाली पुश्ते संस्कारित होंगी और यह युवा पीढ़ी में बढ़ते बुरे संस्कारों को रोकने में प्रभावी हो सकता है।

महर्षि अरविन्द के संस्कारों और जीवन के सम्बन्ध में विचार महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने कहा था कि संस्कार जीवन के अस्तित्व के साथ आरम्भ होते हैं। मानव को सही पथ पर अग्रसरा होने में संस्कार की अहम् भूमिका है। अतः श्रेष्ठ संस्कार को अपनाने वाले मनुष्य में दैवीय गुणों का जन्म होता है। प्रत्येक व्यक्ति को संस्कारवान बनाना आज के समय की महत्ती आवश्यकता है।

महान में इन्हीं सारे सद्गुणों के आधार पर जो समाज बनता है वह चिरस्थायी होता है। यह एक महत्वपूर्ण चिन्तनीय विषय हजारों साल पहले से मानव के सम्मुख था कि आख़िर किस विधि से सारे उत्तम गुणों का आह्वान एक–एक व्यक्ति में किया जाए कि यह समाज राष्ट्र और विश्व महान बन सके। भारतीय ऋषियों ने इस पर गहन चिन्तन मनन किया। आयुर्वेद के वन्दनीय पुरुष आचार्य चरक कहते हैं–

"संस्कारोहि गुणान्तरा धानमुच्चते"

अर्थात् मनुष्य के दुर्गुणों को निकाल कर उसमें सद्गुण आरोपित करने की प्रक्रिया का नाम संस्कार है। वास्तव में संस्कार मानव जीवन को परिष्कृत करने वाली एक आध्यात्मिक विधा है। संस्कारों से सम्पन्न होने वाला मानुष्य सुसंस्कृत, चरित्रवान, सदाचारी और प्रभुपरायण हो सकता है अनथा कुसंस्कार जन्य चारित्रिक पतन ही मनुष्य और समाज को विनाश की ओर ले जाता है। वही संस्कार युक्त होने पर सबका लौकिक और पारलौकिक अभ्युदय सहज सिद्ध हो जाता है। संस्कार सदाचरण और शास्त्रीय आचार के घटक होते हैं। संस्कार सद्विचार और सदाचार के नियामक होते हैं। इन्हीं तीनों की सुसम्पन्नता से मानव जीवन को अभिष्ट लक्ष्य की प्राप्ति होती है। भारतीय संस्कृति में संस्कारों का महत्व सर्वोपरि माना गया है, इसी कारण गर्भाधान से मृत्यु पर्यन्त मनुष्य पर सांस्कारिक प्रयोग चलते ही रहते हैं। इसलिए भारतीय संस्कृति सदाचार से अनुप्रमाणित रही है।

संस्कारों का हमारे जीवन में विशेष महत्व है। संस्कार न हों तो हमारी सामाजिक जिम्मेदारियाँ और सामाजिक भागीदारी शून्य होगी। संस्कारों की पहली पाठशाला घर से शुरू होती है। हम जो घर से सीखते है, वही बाहर करते हैं। इसके बाद विद्यालय में संस्कारों का समायोजन होता है। इसके अलावा संस्कारों में एक अहम् संसकार है, जिसे परोपकार कहा जाता है। परोपकार के जरिए ही समाज में हम एक दूसरे की भावनाओं को समझ पाते हैं। इसी के जरिए हम एक दूसरे की मदद के लिए प्रेरित होते हैं। यदि यह संस्कार न हो तो हम समाज में कोई स्थान प्राप्त नहीं कर सकते। लिहाजा, संस्कारों की कड़ी में हमें परोपकार के बारे में पता होना चाहिए और इसका अनुपालन भी सुनिश्चित करना चाहिए। तभी हम समाज में विशिष्ट स्थान बना पाले में कामयाब हो सकते हैं।

जीवन में आगे बढ़ने के लिए अच्छे संस्कार तथा अनुशासन बहुत आवश्यक है। उसके लिए हर कार्य चाहे वह पढ़ाई का हो, खेल अथवा अन्य कार्य हो उसमें एक निश्चित समय अवधि का होना बहुत आवश्यक है। उसके लिए हमें अपने गुरु तथा माता–पिता, बड़ो का सम्मान करना आवश्यक है। साथ ही हमें अपनी सोच को सकारात्मक रखना आवश्यक है। तभी हम समाज में आगे बढ़ सकते हैं और देश को तरक्की में अपना अमूल्य योगदान दे सकते हैं। संस्कारों में परोपकार सबसे अहम है। हमें दूसरों की मदद करनी चाहिए, तथी एक समृद्ध और सुरक्षित समाज का निर्माण होगा। संस्कार ही हमें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं।

हमारा व्यवहार ही हमारी पहचान है। व्यवहार को उत्कृष्ट बनाने के लिए संस्कार होने चाहिए। संस्कार व्यक्ति को हमारे इसी परिवेश से मिलते हैं। इन सबके बीच परोपकार संस्कार ही है जो सबको एक–दूसरे से जोड़े रखता है। यदि यह संस्कार नहीं होगा तो व्यक्ति भावनात्मक रूप से शून्य होगा। ऐसे व्यक्ति को समाज में न तो स्थान मिलता है और न ही सम्मान।

4. निष्कर्ष

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि आज के इस आधुनिकतम युग में हमें संस्कारों को दरकिनार नहीं करना चाहिए। संस्कार, नैतिकता एवं शिष्टाचार हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका रखते हैं। संस्कारों से भरा बालक शिष्टाचार का महत्व समझता है। आज मनुष्य अपने संस्कार व नैतिक मूल्यों को भूलता जा रहा है। पुराने समय में हम देखेंगे कि संस्कार, नैतिक मूल्यों व शिष्टाचार के लिए कोई विशेष विषय प्रबंध नहीं था। यह सब तो बच्चे अपने पारिवारिक व विद्यालयी माहौल में ही सीखते थे। आज इंटरनेट, मोबाईल की पीढ़ी का युग है। बच्चों को हम पुरानी विचारधारा से बांधकर नहीं रख सकते। हमें खुद भी रूढ़िवादिता को छोड़ना होगा। लेकिन शिष्टाचार व नैतिकता के संस्कारों के बिना हम एक खुशहाल समाज का निर्माण नहीं कर सकते हैं। हमारे संस्कार हमारे पूर्वजों की पहचान है। संस्कारों के नाम पर प्राचीन रूढ़ीवादी विचारों को आधुनिक समय में लागू नहीं कर सकते, लेकिन नैतिक मूल्यों व शिष्टाचार के संस्कारों को भी नहीं भुला सकते। आधुनिकतम युग में हमें विचारों से आधुनिक बनने की आवश्यकता है संस्कारों से नहीं। अगर हम अपने संस्कार, संस्कृति व सभ्यता को भुला देंगे तो बच्चे अंग्रेजी नववर्ष तो मनाते रहेंगे, लेकिन हिन्दी नववर्ष की ओर कभी भी ध्यान नहीं जाएगा और न ही वे कभी इनमें फर्क समझ पाएंगें। अगर आज बच्चों में संस्कारों का बीजारोपण नहीं किया गया तो देश की प्रगति, संस्कृति व सभ्यता का विनाश तय है।

5. सन्दर्भ

1- https://hi.wikipedia.org/wiki/balsanskar.in
2- https://www.jagran.com
3- https://teachersofbihar.blogspot.com/2020/04/blog-post_86.html
4- https://brainly.in/question/52179310
5- https://anntarnad.blogspot.com/2019/05/blog-post_13.html
6- https://www.jagran.com/uttar-pradesh/rampur-12949694.html
7- https://www.sahityarachana.com/2020/10/lekh-aadhunikta-aur-sanskar-diksha-awasthi.html#google_vignette